वी. जी. गोपाल का नेतृत्वकाल

वी. जी. गोपाल
1977-1993

विख्यात मजदूर नेता वी.जी. गोपाल का जन्म 20 दिसंबर 1917 को जमशेदपुर में हुआ था। उनके पिताजी श्री गणपति अय्यर टाटा स्टील के एक कर्मचारी थे। मिसेज के.एम.पी.एम. स्कूल से पढ़ाई पूरी कर उन्होंने 1936 में टाटा स्टील में अनुसचिवीय वर्ग के कर्मचारी के रूप में अपनी सेवा आरंभ की।

एक युवा प्रतिभा के रूप में गोपाल बाबू प्रो. अब्दुल बारी के नेतृत्वकाल में उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मजदूर सेवा की ओर आकृष्ट हुए। 1937 में वे टाटा वर्कर्स यूनियन के शॉप-स्टेवार्ड चुने गये। सच्ची कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी की बदौलत वे बारी साहब के विश्वासपात्र बन गये।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में गोपाल बाबू की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के

साथ ही आंदोलन भड़क उठा। माइकल जॉन के नेतृत्व में जमशेदपुर के मजदूर भी डंके की चोट पर आंदोलन में कूद पड़े। 19 अगस्त तक गोपाल बाबू को छोड़कर लगभग सभी शीर्षस्थ नेता गिरफ्तार कर लिये गये। गोपाल बाबू के ऊपर उस समय अचानक एक बड़ी जिम्मेदारी आ गई। एक तरफ मजदूर आंदोलन और हड़ताल का नेतृत्व तथा दूसरी तरफ स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व। पुलिस की तलाश के बावजूद वे भूमिगत होकर आंदोलन का संचालन करते रहे। उन्होंने अपनी कुशल बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए राष्ट्रीय आंदोलन और कंपनी में हड़ताल, दोनों को लक्ष्यभेदी साबित कर दिखाया। अंततः उन्हें 18 सितंबर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

जेल से वापसी के बाद गोपाल बाबू टाटा वर्कर्स यूनियन के सहायक सचिव नियुक्त किये गये। इस पद पर उन्होंने मार्च 1947 तक कार्य किया। 1946 में गोपाल बाबू ने कंपनी की सेवा से त्यागपत्र देकर अपना पूर्ण समय मजदूर सेवा को समर्पित कर देने का निर्णय लिया। प्रो. अब्दुल बारी की हत्या के बाद माइकल जॉन यूनियन के अध्यक्ष बने और गोपाल बाबू महासचिव। आई.एल.ओ. के बुलावे पर वे पहली बार 1949 में भारतीय मजदूरों के प्रतिनिधि बनकर जिनेवा गये। 1948 में इंटक की स्थापना में गोपाल बाबू ने अपना सक्रिय योगदान दिया। 1956 में यूनियन और प्रबंधन के बीच हुए ऐतिहासिक समझौते में उन्होंने यूनियन के महासचिव के रूप में अपनी भूमिका निभायी। राष्ट्रीय इस्पात समिति की बैठक में उन्होंने सक्रिय योगदान दिया। 1956 में आई.एल.ओ. द्वारा आयोजित सेमिनार में मेक्सिको में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य चुने गये। और इस पद

पर वे 1957 तक बने रहे। 1957 में बिहार विधानसभा के सदस्य (एम.एल.ए.) निर्वाचित हुये। 1947 से 1977 के बीच वे लगातार 30 वर्षों तक टाटा वर्कर्स यूनियन के महामंत्री के पद पर निर्विरोध चुने जाते रहे। इंटरनैशनल माइनर्स फेडरेशन के सदस्य के रूप में भी उन्होंने चार वर्षों तक कार्य किया। आइ.सी.एफ.टी.यू. द्वारा ब्रुसेल्स में आयोजित प्रथम बैठक में भी गोपाल बाबू ने भाग लिया।

3 अगस्त 1977 में माइकल जॉन की मृत्यु के बाद वी.जी. गोपाल टाटा वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष चुने गये। इसी वर्ष वे भारतीय राष्ट्रीय खान मजदूर संघ के उपाध्यक्ष चुने गये। वे इंडियन नेशनल मेटल वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष के पद पर आजीवन कार्यरत रहे।

1980 में गोपाल बाबू भारतीय राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस के उपाध्यक्ष चुने गये। आयरन एंड ओर, लाइम स्टोन वेतन बोर्ड तथा एन.आई.आई. की गवर्निंग बॉडी के सदस्य के रूप में भी उन्होंने कार्य किया । 1980 में संयुक्त राष्ट्रसंघ के बुलावे पर न्यूयार्क में आयोजित निरस्त्रीकरण सम्मेलन में भी उन्होंने भाग लिया। आगे चलकर वे इंटरनैशनल वर्कर्स फेडरेशन, जिनेवा की केन्द्रीय समिति के सदस्य मनोनीत किये गये। सामूहिक सौदेबाजी के विषय पर 1988 में 4 से 26 जून तक उन्होंने आई.एल.ओ. द्वारा जिनेवा में आयोजित सेमिनार में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1987 में मियामी में उन्होंने इंटक की ओर से भारत का प्रतिनिधित्व किया। औद्योगिक शांति के क्षेत्र में श्री वी.जी. गोपाल को उनके किये गये कार्यों के आधार पर एक्स.एल.आर.आई. द्वारा 'सर जहांगीर गांधी सम्मान' से विभूषित किया गया। 1990 में इंटक के उपाध्यक्ष पद पर वे दुबारा निर्वाचित हुए ।

अपने सभापतित्व काल में गोपाल बाबू ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर टाटा वर्कर्स यूनियन और जमशेदपुर के गौरवान्वित किया। उन्होंने टाटा वर्कर्स यूनियन के अलावा टाटा पिगमेंट वर्कर्स यूनियन, ए.सी.सी. सीमेंट प्लांट मजदूर यूनियन, टायो वर्कर्स यूनियन, टिस्को मजदूर यूनियन, तारापोर वर्कर्स यूनियन तथा जादूगोड़ा लेबर यूनियन सहित अन्य कई मजदूर यूनियनों में भी अध्यक्ष की हैसियत से कार्य किया। विश्व के मजदूरों के सबसे बड़े संगठन 'अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल. ओ.) की गवर्निंग बॉडी (प्रबंध परिषद) में गोपाल बाबू का निर्वाचित होना संपूर्ण भारतीय श्रमिक वर्ग के लिए गौरव की बात थी।

14 अक्टूबर 1993 को टाटा वर्कर्स यूनियन परिसर में बारह बजकर पाँच मिनट पर हमलावरों द्वारा वी.जी. गोपाल की नृशंसा हत्या कर दी गयी। अपने 55 वर्षों की मजदूर सेवा में स्वर्गीय वी.जी. गोपाल ने औद्योगिक शांति और संबंध को कायम रखने में अद्वितीय भूमिका निभायी। इस दिशा में गोपाल बाबू द्वारा किए गए कार्य मिसाल है। औद्योगिक शांति के विषय में उन्होंने कहा था, "अनुशासन, उत्तरदायित्व और समर्पित सेवा ये कुछ आवश्यक तत्व हैं, जिनका अनुपालन मजदूर संगठनों के लिए अतिआवश्यक है। प्रबंधन को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह हमेशा ही कुछ काम करे, जिससे मजदूरों को सम्मान प्राप्त होता रहे। औद्योगिक शांति बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि मजदूरों को उद्योग का एक प्रमुख अंग समझा जाये।"